जगदलपुर। पीएम-उषा मेरू कम्पोनेंट एवं इंस्टीट्यूशन इनोवेशन काउंसिल

(आईआईसी) गतिविधि के तहत शहीद महेंद्र कर्मा विश्वविद्यालय में मंगलवार को बौद्धिक संपदा संरक्षण विषय पर एक दिवसीय मेंटरशिप प्रोग्राम का आयोजन किया गया।

हाउ टू प्रोटेक्ट इंटेलेक्टुअल प्रोपर्टी विषय पर आयोजित इस कार्यक्रम में विषय विशेषज्ञ डॉ. अमित दुबे ने नवाचार में बौद्धिक संपदा अधिकार(आईपीआर) के महत्व पर प्रकाश डाला। डॉ. दुबे ने नवाचार के विभिन्न चरणों की जानकारी के साथ संबंधित प्रबंधन के बारे में विस्तार से बताया। उन्होंने कहा कि इनोवेशन में ज्ञान, किएटिविटी, इनपुट, आइडिया, कान्सेप्ट जैसे तत्वों पर विशेष ध्यान देना होता है। डॉ दुबे ने पेटेंट, कॉपीराईट, ट्रेडमार्क, इंडस्ट्रियल डिजाइन, जियोग्राफिकल इंडिकेशन के साथ इनोवेशन को आईपीआर के माध्यम से सुरक्षित करने की प्रक्रिया बताई। देश और अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर पेंटेंट फाइल करने के नियमों की जानकारी दी। डॉ. दुबे ने छत्तीसगढ़ विज्ञान एवं औद्योगिक परिषद् के विभिन्न कार्यक्रमों एवं वित्तीय सहायता के नियम भी बताए। प्रदेश में नवाचार को बढ़ावा देने के लिए परिषद से जुड़ने की जानकारी दी।

इससे पहले कार्यक्रम अध्यक्षता कर रहे कुलपति प्रो. मनोज कुमार श्रीवास्तव ने बताया कि रिसर्च एंड डेवलपमेंट में देश के जीडीपी का मात्र 0.7 प्रतिशत ही खर्च किया जा रहा है। इसी कारण देश में प्रति दस लाख में लगभग 252 विशेषज्ञ ही रिसर्च व नवाचार(इनोवेशन) से जुड़े हैं जबकि डेनमार्क जैसे देश में इतने में ही आठ हजार रिसर्चर जुड़े हैं। पेटेंट के मामले में देश विश्व में छठवें स्थान पर है। वहीं इनोवेशन मामले में भारत 2015 में 81वें स्थान पर था जो 2024 में 39वें स्थान पर आकर उल्लेखनीय सुधार किया है। पेटेंट के मामले में छत्तीसगढ़ का स्थान देश में बहुत नीचे हैं पर इससे हतोत्साहित न होते हुए सुधार करने की जरूरत है। प्रो. श्रीवास्तव ने बताया कि आईआईसी के क्वार्टर टू एक्टिविटी के तहत विवि में 28 फरवरी तक विभिन्न कार्यक्रमों का आयोजन किया जाना है।

आयोजन में आईआईसी के विश्वविद्यालयीन इकाई के अध्यक्ष डॉ. सजीवन कुमार व डॉ नीरज वर्मा, डॉ. तुलिका शर्मा, डॉ रश्मि देवांगन, डॉ. सुषमा सिंह, श्री देवेंद्र यादव का सक्रिय सहयोग रहा। कार्यशाला में विभिन्न महाविद्यालयों के अधिकारी, शिक्षक व विद्यार्थी भी ऑनलाईन जुड़े।